IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, March 2023

हिसार क्षेत्र के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी

पुष्पा कुमारी[1] एवं डॉ. जयवीर सिंह[2]
शोधार्थी, इतिहास विभाग
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग
ओ. पी. जे. एस विश्वविद्यालय, चुरु, राजस्थान

साम्राज्यवादी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जनता की प्रतिक्रिया का परिणाम था, भारत का स्वतंत्रता आंदोलन। यह आंदोलन विभिन्न क्षेत्रों में अपनी गति से चलता रहा। साम्राज्यवादी शासन के दुष्प्रभावों के साथ-साथ इसमें स्थानीय कारण भी जुड़ते गए। 1857 की घटना ने भारतीय जनता में राष्ट्रवाद एवं देशप्रेम की भावना जागृत कर दी। विशेष रूप से दिल्ली एवं आसपास के क्षेत्र में जहाँ की जनता 1857 के जन विद्रोह में काफी सक्रिय थी। संपूर्ण स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान दिल्ली से सटे क्षेत्र हरियाणा के अनगिनत वीरों ने अपना योगदान दिया है, इनमें से बहुत से योद्धाओं की वीरगाथा से हम अभी भी अपरिचित है। हरियाणा के हिसार डिविजन जिसमें वर्तमान फ़तेहाबाद, सिरसा, हिसार, जींद आदि जिले सम्मिलित है, में भी ऐसे कई महान स्वतंत्रता सेनानी हुए हैं जिन्होंने अंग्रेजों के अत्याचार, दमन एवं शोषण का प्रबल विरोध किया। उनमें से कुछ वीरों के साहसिक कार्यों एवं स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान का वर्णन इस प्रकार है।

जुगलकिशोर लाहोरिया हरियाणा के हिसार ज़िले के रहने वाले थे। वह एक क्रांतिकारी थे, जिन्होंने असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सक्रिय भाग लिया। उन्हें दो बार गिरफ़्तार किया गया। जेल में बंद रहने के दौरान उन्हें अंग्रेज़ी राज़ द्वारा दी गई कड़ी यातनाओं को भी सहन करना पड़ा। आरंभ में वे नौजवान भारत सभा से गहन रूप से जुड़े हुए थे, जो अंग्रेज़ी हुकूमत के ख़िलाफ़ लड़ने वाली एक क्रान्तिकारी संस्था थी। बाद में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस द्वारा कांग्रेस छोड़ने के बाद उनके द्वारा गठित आज़ाद हिंद फौज़ में शामिल हो गए। यहाँ उन्हें रानी झाँसी रेजिमेंट में हथगोले और युद्धआपूर्ति विभाग की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी दी गई।

प्रेमदत्त वर्मा का जन्म हरियाणा के हिसार ज़िले में 19 सितंबर, 1911 को हुआ था। वे और पंडित किशोरी लाल भगतसिंह के सबसे कम उम्र के साथी थे। लाहौर षड्यंत्र केस में उन्हें पाँच साल की सजा सुनाई गई थी। उन्हें कोर्ट में सुनवाई के दौरान सरकारी गवाह जयगोपाल पर चप्पल फेंकने के लिए याद किया जाता है। क्योंकि उसने क्रांतिकारियों के बारे में ग़लत टिप्पणी की थी। आज़ादी के बाद उन्होंने अध्यापन को अपना लिया और चंडीगढ़ स्थित पंजाब विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में शिक्षण कार्य किया। इसके बाद यू.एस.ए. चले गए और पी.एच.डी की डिग्री प्राप्त की। कई सारी पुस्तकों का प्रकाशन किया और लगभग सौ वर्ष की आयु पूरी करने के बाद इस संसार से विदा ले ली ।

हुक्म चंद जैन का जन्म सन 1816 में हाँसी ज़िला हिसार में हुआ था। उनके पिता का नाम दुनीचंद जैन था। हुक्मचंद गणित और फ़ारसी के विद्वान थे और इन विषयों पर कई किताबें भी इन्होंने लिखी थीं। वे एक बड़े ज़मींदार होने के बावजूद उदार प्रकृति एवं जनहितैषी थे। प्रारंभ में ये मुग़ल बादशाह बहादुरशाह के दरबार में उच्च अधिकारी थे। बाद में 1841 में इन्हें हिसार और करनाल के क़ानूनगो के पद पर नियुक्त किया गया था। 1857 में वे यहीं कार्यरत थे जब सैनिकों द्वारा क्रांति का बिगुल बजाया गया था। ब्रिटिशराज़ के विरुद्ध महान विद्रोह की तैय्यारी के लिए वे दिल्ली आये जहाँ उन्होंने दिल्ली दरबार में हुई बैठक में महान देशभक्त

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, March 2023

ताँत्या टोपे जैसे नेताओं के भाषण भी सुने। उन्होंने अपने साथी मिर्ज़ा मुनीर बेग़ के साथ मिलकर हरियाणाक्षेत्र में इस जनक्रांति को संगठित करने का संकल्प लिया। इसके लिए मुग़ल सम्राट बहादुरशाह ने सैनिक एवं युद्ध सामग्री द्वारा सहायता भेजने का वचन दिया। हुक्मचंद जैन ने हाँसी वापस आकर एक सैन्य संगठन बनाया। उन्होंने अपनी इस छोटी सी सेना, जो बहुत साधारण से हथियारों से लैस थी, की सहायता से ब्रिटिश संचार के तारों को काट दिया और अंग्रेजों को खूब छकाया। कुछ क्षेत्र भी क़ब्ज़े में ले लिये थे लेकिन वादे के अनुसार जब दिल्ली से सैनिक सहायता नहीं पहुँची तो उन्होंने अपने साथी मिर्ज़ा मुनीर बेग़ को एक पत्र देकर मुग़ल सम्राट के पास भेजा। परंतु बादशाह ने असमर्थता ज़ाहिर कर दी। 20 सितंबर, 1857 को अंग्रेजों ने दिल्ली पर दोबारा अधिकार कर लिया और मुग़ल बादशाह बहादुरशाह को बंदी बना लिया। इसके साथ ही विद्रोह में हिस्सा लेने वालों की तलाश शुरु कर दी। बादशाह के निजी पत्रों में जब हुक्मचंद लिखित वह पत्र मिला तो दिल्ली के ब्रिटिश कमिशनर ने प्राप्त पत्र के आधार पर हिसार के कलेक्टर को लाला हुक्म चंद जैन और मिर्ज़ा मुनीर बेग़ के ख़िलाफ़ तुरंत सख़्त कार्यवाही करने का आदेश दिया। उनके घरों की तलाशी ली गई और उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। हिसार के कलेक्टर की अदालत में लाला हुकमचन्द जैन तथा मिर्जा मुनीर बेग पर मुकदमा चलाया गया और फाँसी की सजा सुनाई गई। 19 जनवरी, 1858 को लाला हुकमचन्द जैन और मिर्जा मुनीरबेग को इनके अपने घरों के सामने ही फाँसी पर लटका दिया गया। इनके शव तक भी परिवार वालों को नहीं दिए गए, बल्कि लाला हुकमचन्द जैन के शव को उनके अपने घर के बाहर ही दफ़ना दिया गया जबकि मिर्जा मुनीर बेग के मृत शरीर का इनके घर के बाहर ही दाह-संस्कार कर दिया गया। इस प्रकार अंग्रेजों द्वारा इन दोनों वीर सेनानियों की धार्मिक भावनाओं को बुरी तरह आहत किया। यही नहीं हुकमचन्द जैन के तेरह वर्षीय भतीजे फ़क़ीरचंद को भी बलपूर्वक फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

चौधरी रणजीत सिंह वैद्य का जन्म गाँव पेटवाड़ ज़िला हिसार के एक साधारण से परिवार में हुआ था। 1914 में दसवीं की परीक्षा पास करके ये माल विभाग में पटवारी के पद पर नियुक्त हो गए। 1921-22 में महात्मा गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन आरम्भ करने पर नौकरी से त्यागपत्र देकर आंदोलन में शामिल हो गए। अंग्रेज़ी शराब और विदेशी वस्त्रों के ख़िलाफ़ खुलकर प्रचार करना आरम्भ कर दिया। फलतः 10 मार्च, 1921 को पुलिस ने देशद्रोह के आरोप में गिरफ़्तार कर लिया। मुक़दमा चलाकर एक साल की कठोर कारावास की सज़ा सुनाई गई। जेल से बाहर आने के बाद पुनः क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल हो गए। 1930 में गाँधी जी द्वारा नमक सत्याग्रह आरम्भ करने पर गाँव- गाँव जाकर बड़ी संख्या में सदस्य बनाए। 26 जून, 1930 में हाँसी में अपने सहयोगियों के साथ गिरफ़्तारी भी दी। इन्हें एक वर्ष के लिए हिसार जेल में क़ैद रखा गया। गाँधी-इर्विन समझौते के अनुसार राजनैतिक क़ैदियों की रिहाई पर ये भी जेल से रिहा हो गए। पुनः पूरी ताक़त से कांग्रेस के प्रचार कार्य के जुट गए। बाद में हिसार कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद के लिए चुने गए। गाँधी जी के आह्वान पर 1941-42 के सत्याग्रह में भी रणजीत जी ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इन्होंने आम सभाओं को सम्बोधित करते हुए जनता को अंग्रेज़ी सरकार का विरोध करने, सेना में भर्ती न होने तथा अंग्रेजी सरकार को किसी भी प्रकार का सहयोग न करने का आह्वान किया। फलस्वरूप उन्हें पुनः बंदी बना लिया गया और नौ महीने की सज़ा सुनाकर मियाँवाली जेल भेज दिया गया। यहीं पर उन्होंने जेल में बंद एक हकीम से आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति का ज्ञान प्राप्त किया। बाद में इन्होंने लोगों का मुफ़्त इलाज भी किया और रणजीत वैद्य के नाम से लोकप्रिय हुए। 1942 भारत छोड़ो आन्दोलन में भी बहुत उत्साह से भाग इस समय भड़के साम्प्रदायिक दंगों के दौरान दोनो धर्मों के लोगों को समझाने का बहुत प्रयास किया। एक दिन वे गाँव लोहारी में साम्प्रदायिक दंगे को शांत करा रहे थे कि दंगाइयों ने उन्हें ही शहीद कर दिया। इस प्रकार इस महान सेनानी ने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर स्वयं को क़ुर्बान कर दिया।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, March 2023

लाटू राम वर्मा का जन्म 20 जनवरी, 1920 को वर्तमान ज़िला सिरसा के डुखड़ा गाँव में हुआ था। पिता एक खेतिहर मज़दूर थे इसलिए छोटी उम्र से ही काम में हाथ बँटाना पड़ा जिससे उनकी औपचारिक शिक्षा पूर्ण न हो सकी। 1930 के अकाल के समय वे सिरसा से ऐलनाबाद आ गए। अंग्रेजों के शोषण को देखकर उन्होंने भारत को स्वतंत्र कराने के बलिदान का संकल्प लिया। लाटू राम ने ऐलनाबाद के कुछ युवकों के साथ मिलके बाल प्रचारिणी सभा का गठन किया जो इंक़लाब के नारे लगाते हुए लोगों को जागृत करते थे। वहाँ वे कांग्रेस पार्टी के सदस्य भी बन गए थे। 1939 में अंग्रेजों द्वारा भारत को युद्ध में झोंकने का विरोध करते हुए भाषण देते और लोगो को इस युद्ध में सहयोग न करने की प्रेरणा देते। फलतः वे गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हें नौ महीने के लिए कठोर कारावास का दंड मिला। उन्हें हिसार जेल और बाद में लाहौर जेल में रखा गया। जेल से बाहर आने के बाद भारत छोड़ो आंदोलन के समय वे और अधिक सक्रिय हो गए। 13 अगस्त, 1942 को इन्हें पुनः बंदी बना लिया गया और मुल्तान की सेंट्रल जेल भेज दिया। यहाँ से रिहा होने के बाद देशभक्त लाटूराम वर्मा ने प्रचार का एक अनोखा तरीका निकाला। वे करो या मरो का नारा लगाते हुए एक हाथ में लालटेन और दूसरे हाथ में तिरंगा लेकर गांव-गांव प्रचार करते थे। वे जनता में लालटेन वाले कॉमरेड के नाम से प्रसिद्ध हुए। जनसभाओं में भाषण द्वारा आम जनता को भारत की आजादी हेतु कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते। अंग्रेज अधिकारियों ने इनकी गतिविधियों से परेशान होकर इन्हें फिर से गिरफ्तार कर लिया। लेकिन इनके विरुद्ध कोई ठोस सबूत न पाकर इन्हें रिहा करना पड़ा। इन्होंने 1946 में कांग्रेस पार्टी के सदस्यता ले ली। उन्होंने दलितों और किसानों के हित के लिए भी कार्य किए। अंग्रेजी पुलिस ने अंतिम बार इन्हें 1946 में ऐलनाबाद में गिरफ्तार किया था। लाटूराम ने ऐलनाबाद से सिरसा कोर्ट में पेश होने के लिए पैदल जाने से इंकार कर दिया था। मजबूरन इन्हें घोड़े पर बिठाकर सिरसा के न्यायाधीश के सामने पेश किया। सिरसा के नवयुवक लाटूराम के इस साहस से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके और उन्होंने नारे लगाकर उनका स्वागत किया। इस सारी घटना से नाराज होकर मजिस्ट्रेट ने उन्हें दो साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई। 1947 में देश की आजादी के समय वे लायलपुर जेल में बंद थे। बाद में पंजाब के गवर्नर ने अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए उन्हें जेल से रिहा किया था।

लाला श्यामलाल सत्याग्रही का जन्म 1878 में सिरसा में हुआ था। वे एक वकील और प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। ये अपने उपनाम 'सत्याग्रही' से अधिक लोकप्रिय थे। उन्होंने दसवीं की परीक्षा हिसार से और उच्च शिक्षा लाहौर से प्राप्त की। श्यामलाल ने पहले अटॉर्नी और बाद में वकील के रूप में कार्य शुरू किया। 1910 में उन्होंने मुख्यालय हिसार में अपनी वकालत शुरू की और वकील के रूप में काफी ख्याति प्राप्त की। श्याम लाल ने 22 से 24 अक्टूबर, 1920 के दौरान भिवानी में आयोजित एक राजनीतिक सम्मेलन में भाग लिया। जिससे उनके ऊपर एक गहरा प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप असहयोग आंदोलन के दौरान उन्होंने अपनी पाश्चात्य जीवन पद्धति का त्याग कर दिया, वकालत छोड़ दी, खादी वस्त्र धारण कर लिए, विदेशी वस्त्रों की होली जलाई और स्वदेशी का प्रचार करने के लिए हर संभव कार्य किए। उन्होंने रिसेप्शन कमेटी के अध्यक्ष होने के नाते 26 सितंबर, 1921 को हिसार जिला राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें हिसार जिले की सभी तहसीलों से कार्यकर्ता एवं बड़ी संख्या में श्रोता इकट्ठे हुए, जिन्हें कांग्रेस के कार्यक्रम का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया गया। असहयोग आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने हिसार क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर जनसभाओं को संबोधित किया। 15 जनवरी, 1922 को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और छह महीने के कठोर कारावास की सजा सुनाकर सेंट्रल जेल अंबाला भेज दिया गया। यहाँ उन्होंने महान स्वतंत्रता सेनानी श्री अरविंदो घोष की कृतियों का अध्ययन किया और जेल से रिहा होने के बाद उनसे मिलने के लिए अपने परिवार सहित पांडिचेरी की यात्रा की। साथ ही उन्होंने साबरमती आश्रम की भी यात्रा की जहाँ वे 1922 से 1923 तक ठहरे। साबरमती आश्रम से लौटने के बाद, जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष होने के नाते उन्होंने हिसार की बजाय सिरसा को अपना मुख्यालय बनाया। क्योंकि असहयोग आन्दोलन की वापसी के

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, March 2023

बाद, यहाँ एक प्रकार से निराशाजनक माहौल व्याप्त हो गया था। पटना कांग्रेस के निर्णय के अनुसार उन्होंने सिरसा के लोगों को कांग्रेस की सदस्यता लेने के लिए प्रेरित किया। जिसका परिणाम यह रहा कि 1925 तक सैकड़ों की संख्या में लोगों ने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। 1937 में पंजाब प्रांतीय विधानसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस प्रत्याशी के समर्थन में श्याम लाल सत्याग्रही ने हिसार क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर जनसभाओं को संबोधित किया। कांग्रेस कार्यकारिणी द्वारा सिरसा नगर निगम के चुनाव के दौरान उन्हें निरीक्षक का कार्यभार सौंपा गया। उन्होंने बहुत सारी जनसभाओं को संबोधित किया और कांग्रेस प्रत्याशी को भी नामांकित किया। 8 जनवरी 1938 को उन्होंने सिरसा तहसील कॉन्फ्रेंस को भी संबोधित किया। 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान उनकी पत्नी चंदाबाई और उनके बेटे डॉक्टर मदन गोपाल ने भी सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और पहले गुजरात विशेष जेल और बाद में लाहौर महिला जेल में भेजा गया। संभवत: श्यामलाल जी का परिवार हिसार का पहला परिवार था जो स्वतंत्रता आंदोलन में गिरफ्तार हुआ। अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के सदस्य की हैसियत से उन्होंने कांग्रेस के बहुत सारे वार्षिक अधिवेशनों में हिस्सा लिया। वे 1923 में पंजाब की प्रांतीय विधानसभा और 1940 में केन्द्रीय विधान सभा के लिए चुने गए। 1946 के चुनावों में डॉ गोपीचंद भार्गव के साथ उनके कुछ मतभेद हो जाने के कारण उन्होंने कांग्रेस पार्टी की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद वो दो बार स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़े, लेकिन जीत न सके। 5 अक्टूबर, 1957 को हिसार में इस वीर सेनानी का देहांत हो गया।

लाला बलवंतराय तायल हिसार के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों में से एक है। 15 अगस्त, 1947 को जब देश को आजादी मिली उसी रात हिसार में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराने का कार्य बलवंत तायल जी ने किया था। बलवंत तायल जी 1939 में कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए थे और अगले साल ही सत्याग्रह आंदोलन शुरू हुआ तो उसमें भी शामिल हो गए। 10 फरवरी, 1941 को अंग्रेजी सरकार के विरोध में भाषण देने की सजा के तौर पर उन्हें गिरफ्तार कर एक वर्ष के लिए जेल में बंद कर दिया गया। जेल से बाहर आने के बाद भी उन्होंने अपनी गतिविधियों को जारी रखा। परिणामस्वरूप 1942 में 5 जून और 15 अगस्त को फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। जब आचार्य विनोबा भावे जी ने देश भर में भूदान आंदोलन चलाया तो हरियाणा के लोग भी सहयोग में पीछे नहीं रहे। विनोबा जी जब हिसार आए तो बलवंत तायल जी के साथ भूदान आंदोलन को लेकर विचार-विमर्श किया। विनोबा भावे जी ने उनसे कहा कि तायल साहब आप के पांच पुत्र हैं, तो छठा पुत्र उन्हें मानकर अपनी कुल जमीन का छठा हिस्सा दान कर दें। यह सुनकर तायल जी ने बिना समय गंवाए विनोबा जी को जवाब दिया कि उनके पास 36 एकड़ जमीन है, इसका छठा भाग यानी 6 एकड़ जमीन आप को दान कर दिया। इतना ही नहीं वह भूदान आंदोलन में विनोबा भावे के साथ पदयात्रा में भी शामिल रहे।

डॉ. रामजीलाल का जन्म सांघी गांव जिला रोहतक के एक संपन्न परिवार में 1860 में हुआ था। डॉक्टरी की पढ़ाई पूर्ण करने के बाद इन्होंने सरकारी नौकरी कर ली। ये हिसार अस्पताल में कार्यरत थे। यहीं पर नौकरी करते हुए ये लाला लाजपत राय जी के संपर्क में आए और राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ गए। आर्य समाज के संपर्क से इनमें देश सेवा और देश प्रेम की भावना उत्पन्न हुई जो समय के साथ बढ़ती चली गई। राष्ट्रीय आंदोलन की गतिविधियों से जुड़े होने की वजह से अंग्रेजी सरकार से इन्हें चेतावनी मिली, पर डॉ॰ रामजीलाल ने इस चेतावनी की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। फलस्वरूप डॉ॰ रामजीलाल का तबादला हिसार से राजनपुर कर दिया गया। डॉ॰ रामजीलाल ने इसे अपनी बेइज्जती समझा और कहा कि मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूँगा और उन्होंने सरकारी सेवा से त्यागपत्र दे दिया। त्यागपत्र देने के बाद भी हिसार में रहते हुए ही उन्होंने न केवल स्वतंत्र रूप से डॉक्टरी की बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन में भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। लाला लाजपत राय ने भी अपने जातीय भाइयों में देशप्रेम की भावना जगाने और उन्हें सार्वजनिक

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, March 2023

कार्यों के लिए प्रेरित करने हेतु डॉ॰ रामजीलाल की प्रशंसा अपनी आत्मकथा में की है। राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान के अतिरिक्त अछूतोद्धार और शिक्षा के प्रसार के सराहनीय कार्यों के लिए डॉ॰ रामजीलाल को हमेशा याद किया जाता रहेगा।

दादा गणेशी लाल हिसार के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे। इनका जन्म पटियाला में हुआ था लेकिन इनका कार्यक्षेत्र हिसार ही रहा। आरंभ में ये एक सिलाई कंपनी में नौकरी करते थे। बाद में यह राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गए। ये महात्मा गाँधीजी के विचारों से बहुत अधिक प्रभावित थे। ये उनके आदर्शों पर चलने वाले सच्चे गांधीवादी थे इसलिए ये हिसार के गांधी के नाम से लोकप्रिय हुए। आचार्य विनोबा भावे और जयप्रकाश सरीखे नेताओं से उनका निजी लगाव और संपर्क रहा। इन्होंने भूदान यज्ञ बोर्ड में बढ़-चढ़कर कार्य किया और अन्य नेताओं के साथ 1000 मील तक पैदल यात्रा करके भूदान यज्ञ बोर्ड की सेवाएं भूमिहीन किसानों को प्रदान की। इन पर आर्य समाज का भी बड़ा प्रभाव था। इन्होंने अन्य बहुत से देशभक्तों को न केवल गांधीवाद और समाजवाद से परिचित कराया बल्कि उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित भी किया।

लाला हरदेव सहाय का जन्म 26 नवंबर, 1892 को सतरोड गांव जिला हिसार में हुआ था। इन्हें हरियाणा ग्रामीण शिक्षा के पिता और भारत के सर्वश्रेष्ठ गौ रक्षक के रूप में भी जाना जाता है। ये सार्वजनिक जीवन आरंभ करने से भी पहले गौ रक्षिणी सभा, हिसार के सचिव रहे थे। इन्होंने ही सर्वप्रथम सन् 1912 में हरियाणा में हिंदी माध्यम का स्कूल खोला और इसके बाद हिसार, भिवानी, सिरसा और फतेहाबाद क्षेत्र में 65 स्कूल और एक शिल्पशाला भी खोलने में योगदान दिया। ये लगभग तीन दशकों तक राष्ट्रीय आंदोलन में भी सक्रिय भूमिका निभाते रहे।

डॉ॰ गोपीचंद भार्गव का जन्म 1889 में सिरसा में हुआ था। इन्होंने प्रारंभिक शिक्षा हिसार और डॉक्टरी की पढ़ाई लाहौर से पूर्ण की। 1919 तक यह एक सफल डॉक्टर बन गए थे। लेकिन 1919 के जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद ये सक्रिय रूप से राजनीति से जुड़ गए। ये लाला लाजपत राय, पंडित मदन मोहन मालवीय और सबसे अधिक महात्मा गांधीजी से प्रभावित थे। ये अपनी मेहनत और लगन के कारण शीघ्र ही प्रांतीय स्तर के नेता बन गए। उन्होंने 1923, 1930, 1933, 1940 और 1942 में होने वाले आंदोलनों का नेतृत्व किया और जेल भी गए। वे एक सच्चे देशभक्त, निष्ठावान और उदार दृष्टिकोण के व्यक्ति थे। उन्होंने गांधीजी के साथ। अछूतोद्धार और स्वदेशी के प्रसार के लिए भी महत्वपूर्ण काम किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वे स्वतंत्र भारत के संयुक्त पंजाब के प्रथम मुख्यमंत्री पद पर चुने गए। इस पद पर रहते हुए उन्होंने विभाजन से उत्पन्न कटुता और उत्तेजना के बीच प्रशासन को सही दिशा की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 26 दिसंबर, 1966 को इन महान स्वतंत्रता सेनानी का निधन हो गया।

इस प्रकार हिसार क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़कर जहाँ एक तरफ भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में नई ऊर्जा का संचार किया वहीं अन्य क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संदर्भ सूची

- कपूर, मदनलाल (2008), 1857 की क्रांति में हरियाणा का योगदान, जेबीडी प्रा॰ लि॰, करनाल
- गुप्ता, जुगलकिशोर (1991), हिस्टरी ऑफ सिरसा टाउन, अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स,नई दिल्ली
- जुनेजा, एम. एम.(2011), लाला हरदेव सहाय: जीवनी, मॉडर्न पब्लिशर्स, हिसार

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, March 2023

- जुनेजा, एम. एम.(2004), हिसार सिटी:प्लेसेस एंड पर्सनैलिटीज, मॉडर्न पब्लिशर्स, हिसार
- जुनेजा, एम. एम.(1981), एमिनेंट फ्रीडम फाइटर्स इन हरियाणा, मॉडर्न बुक कंपनी, हरियाणा
- डॉ॰ महेंद्र सिंह(2019), हिसार-ए-फिरोजा: इतिहास के झरोखे में, रिसर्च इंडिया प्रेस, नई दिल्ली
- यादव, के. सी.(2003), हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति, मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स, नई दिल्ली
- संस्कृति मंत्रालय और अमर चित्रकथा के विशेष सहयोग से अमृत महोत्सव के लिए प्रस्तुत श्रृंखला, https://amritmahotsav.nic.in/unsung-heroes.htm